मां की ममता



बच्चोंकी कहानियाँ

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

स्नेह अग्रवाल

हमारे देश की संस्कृति दुनिया में सबसे पुरानी और काफी समृद्ध है। मगर आपसी झगडों, जलन और बैर की वजह से हम कमज़ोर हो गये हैं और इसी वजह से डरी-सहमी हालत में जी रहे हैं। नये ज़माने की शिक्षा भी हमें सुधार नहीं पाई है। इसीलिए इस कमज़ोर और खतरनाक हालत से हम उबर नहीं पा रहे हैं। फिर भी यह हक़ीक़त है कि हमारी संस्कृति अत्यंत जीवंत है, कभी मिट नहीं सकती है।

दूसरे प्राणियों के मुक़ाबले आदमी में यह एक विशेषता है कि उसमें धर्म की सूझबूझ है। अच्छा-बुरा, धर्म-अधर्म परखने का उसे विवेक है। मैं तो इसे ही सच्चा धर्म मानता हूं। 'धर्म' वही है जिससे आदमी का सुखी, सार्थक जीवन बनता है। धार्मिक इन्सान समझता है कि दूसरों के सुख में उसका भी सुख है। दूसरों को तबाह करके कोई सुखी नहीं हो सकता। दूसरों के दुःख से जो सुख उठाता है, वह अधर्मी है।

सच्चाई और अहिंसा, धर्म पर चलने के दो रास्ते हैं। दुनिया के सभी धर्मों में इन दो बातों पर ज़ोर दिया गया है। हिन्दू, इस्लाम, बौद्ध, ईसाई, पारसी, जैन, सिख आदि सभी धर्मों के पैग़म्बरों ने धर्म के जिन आदर्शों की बात कही है, वह हर इन्सान के लिए समान रूप से लागू होती है। हमारे देश की परंपरा में सब धर्मों के लिए इज्ज़त की भावना रही है। हिन्दू धर्म का दायरा बहुत बड़ा और सबका भला चाहनेवाला रहा है। अफ़सोस है तो इस बात का कि हम लोगों में एक के बाद एक कमजोरियां आती गईं और एक उदार धर्म की अनमोल दौलत हम संभाल नहीं सके।

आज इस बात की ज़रूरत है कि दुनिया के विकसित धर्मों में हमारे लिए जो आवश्यक बातें कही गयी हैं उन्हें हम समझें और अपने जीवन में उन पर चलने की कोशिश करें।

नई पीढ़ी को सही समझ और शिक्षा देने के लिए ऐसे विचार उनके सामने रखना जरूरी है जिससे वे आदर्शों की तरफ प्रेरित हों और ज़िन्दगी का सही रास्ता उन्हें मिल सके।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा ने इसी उद्देश्य से दुनिया के मुख्य धर्मों में जो शिक्षाप्रद कहानियां हैं, बडे-बडे संत-पैग़म्बरों की ज़िन्दगी में जो सच्ची घटनाएं हुई हैं, उन्हें लेकर एक सौ सचित्र पुस्तकें छापने की योजना बनाई है।

कहानियां इस तरह रखी गयी हैं कि बच्चों को वे उपदेश नहीं, जीवन से जुडी हुई मालूम हों और आसानी से समझ में आ जायें। मुझे उम्मीद है कि बच्चों के माता-पिता भी इन कहानियों को दिलचस्पी से पढ़ेंगे और अपने जीवन को समृद्ध करेंगे।

मुझे उम्मीद है कि इस कोशिश को पसन्द किया जायेगा, इस पर अमल किया जायेगा और इसका प्रचार किया जायेगा।

मोरारजी देसाई

अध्यक्ष,
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

संपादक : मूलशंकर भट्ट बच्चों की कहानियां–३

मां की ममता

स्नेह अग्रवाल

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

चित्रकार :

अरुण शाह

मूल्य :

दो रुपये

मुद्रक :

जितेन्द्रभाई ठाकोरभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय
अहमदाबाद–३८० ०१४

प्रकाशक :

वाडीलाल डगली
मानद मंत्री
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिग
बम्बई–४०० ००२

एकमात्र विक्रेता

एस० चन्द एण्ड कम्पनी लि०

मुख्य कार्यालय : रामनगर, नयी दिल्ली-११००५५
शो रूम : ४/१६-बी, आसफ अली रोड, नयी दिल्ली – ११०००२

शाखाएं :

अमीनाबाद पार्क, लखनऊ-२२६००१
२८५/जे, बिपिनबिहारी गांगुली स्ट्रीट, कलकत्ता-७०००१२
सुल्तान बाजार, हैदराबाद-५०००० १
३, गांधी सागर ईस्ट, नागपुर–४४०००२
खजांची रोड, पटना–८००००४
माई हीरां गेट, जालन्धर-१४४००१
१५२, अन्ना सलाए, मद्रास-६००००२
ब्लैकी हाउस, १०३/५, वालचन्द हीराचन्द मार्ग, बम्बई-४००००१
के० पी० सी० सी० बिल्डिंग, रेसकोर्स रोड, बंगलोर–५६०००९
६३१–७, महात्मा गांधी रोड, एर्नाकुलम, कोचीन-६८२०११

मां की ममता

महाभारत की लड़ाई शुरू होने से
ं, श्रीकृष्ण के हस्तिनापुर लौटते
शान्ति की जो थोड़ी बहुत आशा
वह भी जाती रही ।

विदुर ने कुन्ती को बताया, "दुर्यो-
ने सन्धि की बात नहीं मानी,
लए अब भयंकर लड़ाई हुए बिना
रह सकती । इस लड़ाई के कारण
ाय जाति को कितनी घोर विपदाओं
सामना करना पड़ेगा, दिन-रात इसी
ता में रहने के कारण मेरी नींद
और भूख जाती रही है ।"

विदुर की बात सुनकर कुन्ती दुःख से व्याकुल हो उठीं । एक लम्बी सांस लेकर, वे मन-ही-मन सोच में डूब गयीं, "भीष्म, द्रोण, कर्ण जैसे अजेय महा-रथियों को मेरे बच्चे कैसे हरा पायेंगे ? कौरवों की सेना में ये तीनों ही ऐसे हैं जो मेरे लड़कों के प्राणलेवा बन सकते हैं । इनमें से आचार्य द्रोण शायद शिष्यों पर अपने प्यार के कारण उन्हें



"राधा और सारथि अधिरथ का बेटा कर्ण आपके चरणों में प्रणाम करता है।"

छोड़ दें। पितामह भीष्म भी अपने पौत्रों पर दया करें, पर कर्ण का मुझे डर है। दुर्योधन जो चाहे वह करने की उसकी तैयारी है, और इसी वजह से कर्ण ने मेरे पुत्रों को मारने की ठान रखी है।"

कुन्ती सोचने लगीं कि यदि कर्ण को उसके जन्म का सच्चा हाल मैं बता दूं, तो शायद उसके विचार में कुछ बदल हो। वह युधिष्ठिर की तरफ हो जाये शायद। कर्ण मेरा बेटा है, इसलिए वह मेरे भले की बात कभी नहीं टालेगा। यह सब सोचकर कुन्ती के मन को बड़ा संतोष मिला।

वे अपने महल से निकलीं और अपने बेटों की सुरक्षा का विचार करती हुई सीधे गंगा के तट पर पहुंचीं।

यहां कर्ण रोज शाम को पूजा किया करता था। आज भी वह पूजा में डूबा था। कुन्ती ने कर्ण के मुंह से वेद-पाठ के स्वर सुने। वह अपनी दोनों बाहें ऊपर उठाकर पूरब की तरफ घूमकर पाठ कर रहा था।

कुन्ती उसके पीछे खड़ी हो गयीं और वेद-पाठ खत्म होने की राह देखने लगीं। सूर्य के डूबने तक कर्ण इसी तरह ध्यान में डूबा जप करता रहा। अपनी पूजा खत्म कर जब वह पीछे की ओर मुड़ा, उसने कुन्ती को सामने देखा। हाथ जोड़कर प्रणाम किया, और मुस्कराते हुए बोला, "राधा और सारथि अधिरथ का बेटा कर्ण आपके चरणों में प्रणाम करता है। आज्ञा कीजिए, मैं आपकी क्या सेवा करूं?"

कुन्ती ने कहा, "कर्ण! तुम अधिरथ और राधा की संतान नहीं हो। सूत-कुल में तुम्हारा जन्म नहीं हुआ। तुम मेरे बेटे हो। सूर्यदेवता के आशीर्वाद से मैंने तुम जैसे वीर पुत्र को पाया था। मेरी यह बात बिलकुल ठीक है।

"जिस समय मैं कन्या थी, उसी समय मैंने तुम्हें पाया था। शास्त्र के अनुसार तुम महात्मा पांडु के ही पुत्र हो। तुम क्षत्रिय हो। तुम्हारा

कल्याण हो। कर्ण, तुम्हारे ये कवच और कुंडल तुम्हें जन्म से ही मिले हुए हैं। तुम देवकुमार हो।

"बेटा, मोहवश तुम दुर्योधन के पक्ष में हो गये और उसकी सेवा कर रहे हो। अपने भाइयों को न पहचानकर, उनसे शत्रुता कर रहे हो। अपने भाइयों के साथ संबंध न रखकर धृतराष्ट्र के लड़कों के भरोसे रहना तुम्हारे लिए अपमान की बात है। माता-पिता को खुश रखना बच्चों का सबसे बड़ा धर्म है।

"लोभ और छल-कपट से दुष्ट कौरवों ने पांडवों का राज्य छीन लिया है। तुम उसका उद्धार करके अपने भाइयों सहित उसका भोग करो। तुम अर्जुन के साथ मिल जाओ। वीरता से लड़ो और राज्य हासिल करो। दोनों भाई मिलकर शत्रु का घमण्ड चूर कर दो। कौरव देखते रह जायें और दुष्ट लोग तुम्हारे सामने सिर झुकाएं यही मेरी इच्छा है।

"तुम और अर्जुन दोनों उसी तरह पराक्रमी हो जिस तरह श्रीकृष्ण और बलराम। कर्ण, तुम और अर्जुन यदि एक हो जाओगे तो फिर कौन-सा ऐसा काम होगा, जिसे तुम न कर सको?

"पांचों छोटे भाई तुम्हारे अधीन रहेंगे। तुम उनके बीच में इस तरह सुंदर दीखोगे, जिस तरह यज्ञ की वेदी पर देवताओं से घिरे ब्रह्माजी शोभित होते हैं। तुममें सारे गुण हैं और मेरे पुत्रों में तुम सबसे बड़े हो, पराक्रमी हो। तुम कुन्ती के बेटे हो कर्ण, तुम अपने को सूतपुत्र नहीं कह सकते।"

कुन्ती के यह कहने के तुरन्त बाद ही सूर्य भगवान की आवाज कर्ण ने सुनी। उस आवाज में पिता का स्नेह भरा था, "कर्ण, तुम मनुष्यों में श्रेष्ठ हो। तुम्हारी मां ने जो कुछ कहा है, वह सब सच है। तुम्हें उसका पूरी तरह पालन करना चाहिए। इसी में तुम्हारा कल्याण है।"

कर्ण बोला, "मां, तुमने जो कुछ भी कहा है, वह ठीक होने पर भी, तुम्हारी बात किसी तरह से मेरे मन में बैठ नहीं पा रही है। मैं तुम्हारी बात नहीं मान सकता। तुम्हारी सारी बातें धर्म के खिलाफ हैं।



"सूर्य भगवान की आवाज कर्ण ने सुनी"

"तुमने मेरे साथ जो अत्याचार किया है, उसका क्या जवाब दोगी तुम ? पैदा होते ही तुमने मुझे पानी में फेंक दिया । मेरा यश और मेरी कीर्ति तो वहीं खत्म हो गयी थी । मेरा जन्म बेकार हो गया था ।

"क्षत्रिय वंश में पैदा होकर भी, मैं तुम्हारी वजह से कुल के संस्कारों से अलग रहा । इससे अधिक मेरा नुकसान तो मेरा शत्रु भी नहीं कर सकता था ।

"जब मेरे लिए कुछ करने का समय था, उस समय तुम्हें ये सब बातें क्यों न याद आयीं ? आज, जब कि मेरा सारा जीवन सूत जाति में बीता है, मेरे संस्कार बदल नहीं सकते, तुम मुझे क्षत्रिय धर्म की याद दिलाने आई हो ?

"मां होने पर भी तुमने मेरे साथ मां जैसा व्यवहार नहीं किया । मेरा क्या होगा, इसकी चिन्ता तुमने कभी नहीं की । अगर मैं तुम्हारा बेटा था, तो मेरी भलाई के लिए क्या किया तुमने ?

"तुम्हारा जो कर्त्तव्य था, क्या उसे तुमने पूरा किया ? आज तुम्हारे मन में अपने बेटों की भलाई का स्वार्थ जागा है । अपना काम निकालने के लिए तुम्हें मेरी याद आई है, और इसलिए आज अपना पुत्र बनाकर तुम मुझे मेरे कर्त्तव्य की याद दिला रही हो ।

"अर्जुन की वीरता भला कौन नहीं जानता है ? और अब तो खुद कृष्ण भगवान उसके साथ हैं ! तुम्हारी बात मानकर, डर से, इस समय यदि मैं दुर्योधन का साथ छोड़ दूं और पाण्डवों की तरफ हो जाऊं तो सब मुझे डरपोक कहेंगे । क्षत्रिय मुझे कायर समझेंगे ।

"धृतराष्ट्र के पुत्रों ने मेरी सारी इच्छाएं पूरी की हैं । मुझे बहुत सुख दिया है, हमेशा मेरा सम्मान किया है । क्या उनके उपकारों का बदला मैं तुम्हारी बात मानकर चुकाऊं ? जिन्होंने मुझे धन-सम्पत्ति दी, गौरव दिया, मैं उनके साथ कृतघ्नता का बर्ताव कैसे कर सकता हूं ?

"मेरे ऊपर उन्हें विश्वास है । इसी भरोसे पर वे शत्रुओं के सामने डटकर खड़े होने का साहस करते हैं । उन्हें विजय की पूरी आशा है । जब



"पैदा होते ही तुमने मुझे पानी में बहा दिया ।"

उनके लिए कुछ करने का समय आया है, तो मैं उन्हें निराश कर दूं, उनके सपने तोड़ दूं? उन्हें इस समय छोड़ देना उनके साथ विश्वासघात करना होगा।

"आपके कहने से मैं उनके साथ दोस्ती का संबंध तोड़ दूं जब कि वे मुझे ही युद्ध के सागर को पार करने की नाव समझते हैं? उन्हें तो युद्ध के लिए मैंने ही उभारा है।

"मैं सहायता देने का दम भरता रहा हूं और आज जब सहायता का समय आया है तब उनसे दगा करूं, यह तुम्हारी कैसी सलाह है?

"मुझ पर उनका जो ऋण है, उसे मैं इस समय युद्ध में सहायता देकर चुकाना चाहता हूं। इस समय मुझे अपने प्राणों की बाजी लगाकर भी उनका यह ऋण चुकाना ही होगा।

"मैंने दुर्योधन का नमक खाया है। इस समय बदल जाऊंगा तो क्षुद्र चीजों की चोरी करनेवाले नीच से भी अधिक नीच समझा जाऊंगा। इसलिए दुर्योधन की भलाई के लिए मैं तुम्हारे बेटों के साथ जरूर लड़ाई करूंगा। मैं तुमसे झूठ नहीं बोलता। आज मेरा कर्त्तव्य यही है कि मैं पांडवों के विरुद्ध सारी शक्ति लगाकर लडूं। मुझे इस कड़वी सच्चाई के लिए क्षमा कर दो।

"इतना जरूर है कि लड़ाई के उस घमासान मैदान में भी मैं सदाचार, दयालुता और सज्जनता की रक्षा करूंगा। मैं लडूंगा तो जरूर, लेकिन आदमी बनकर लडूंगा।"

कर्ण इतना कहकर चुप हो गया।

अब कुन्ती के पास क्या बचा था कहने को?

ससार में मां का दर्जा सबसे ऊंचा माना जाता है। कर्ण मां की बात नहीं मान सकता था, फिर भी उसने मां को एकदम खाली हाथ नहीं लौटाया।

तनिक सोचकर उसने कुन्ती से कहा, 'मेरे पास आने का जो कष्ट तुमने उठाया है, वह बेकार नहीं जायेगा। युधिष्ठिर, भीम, नकुल और सहदेव तुम्हारे इन चारों पुत्रों से मेरा

कोई वैर नहीं है । तुम्हें प्रसन्न करने के लिए मैं प्रण करता हूं कि लड़ाई में यदि ये चार मेरे हाथ आ भी जायेंगे, तो मैं इन्हें नहीं मारूंगा । इसे तुम बिलकुल सच मानो और निश्चय जानो ।

"मेरी लड़ाई अर्जुन के साथ ही होगी । इस लड़ाई में या तो अर्जुन काम आयेगा, या मैं काम आऊंगा । हम दोनों में से एक को लड़ाई में बलिदान होना पड़ेगा । इसलिए मां, हर हालत में तुम्हारे तो पांच पुत्र रहेंगे । तुम चिंता न करो ।"

अपने बड़े पुत्र की खरी-खरी बातें सुनकर कुन्ती दुःख से कांप उठीं । कुछ बोल न सकीं ।

कर्ण को उसने गले से लगा लिया और कहा, "तुमने अपने चार छोटे भाइयों की प्राणरक्षा का जो वचन दिया है, उसे लड़ाई के समय भूल न जाना । तुम्हारा कल्याण हो !"

कुन्ती धीरे-धीरे जा रही थीं । कर्ण की आंखें गीली थीं । वह एकटक कुन्ती को जाते हुए देखता रहा ।

लड़ाई के समय कर्ण ने अपने वचन को पूरी तरह निभाया ।

●

हंस और कौवा

बहुत समय पहले की बात है।

एक समुद्र के तट पर, एक धर्मात्मा राजा राज्य करता था।

उसी राज्य में एक धनवान वैश्य भी रहा करता था। उसके परिवार के सदस्यों की जूठन खाकर एक कौवा उनके यहां पलता था। वैश्य के बच्चे उस कौवे को हमेशा घी, मधु, दूध, दही, भात, खीर आदि खाने को देते थे। रोज बढ़िया-बढ़िया और स्वादिष्ट खाना खाकर कौवे को जूठन खाने में सुख मिलने लगा।

सुख में वह यह भूल गया कि वह है कौन, और उसके गुण-दोष क्या हैं। वह घमंडी हो गया। अपने साथियों तथा अपने से बड़े पक्षियों को वह कुछ भी नहीं समझता था। तरह-तरह से उनका अपमान करता था।

एक दिन समुद्र के किनारे, मान-सरोवर में रहनेवाले कुछ राजहंस आये। वे गरूड़ के समान लम्बी उड़ानें भरते थे। उनके अंगों पर चक्र के निशान थे। वे सब बड़े शांत और संतुष्ट दिखाई देते थे।

हंसों को देखकर वैश्य के बच्चों ने कौवे से कहा, "कौवे, तुम पक्षियों में सबसे श्रेष्ठ हो। आकाश में विचरनेवाले ये हंस दूर-दूर तक की उड़ानें भरते हैं। तुम भी इन्हीं की तरह ऊंची और दूर तक की उड़ान भर सकते हो। तुमने अपने मन में कभी ऐसी उड़ान भरने की क्यों नहीं सोची? ये हंस नाहक ही अपने को श्रेष्ठ समझते हैं। तुम्हें इनसे भी ऊंची-लम्बी उड़ान भरकर इनका गरूर मिट्टी में मिला देना चाहिए।"

बालकों की चापलूसी भरी बातों में मूर्ख कौवा आ गया। उनकी प्रशंसा को सच मानकर घमंड में फूला न समाया। उसने सोचा कि इन हंसों में सबसे बड़ा जो होगा, उसी को मैं उड़ने की चुनौती देकर हराऊंगा। वह उड़कर हंसों के झुंड

में पहुंचा । उनमें से जिस हंस को उसने बड़ा समझा, उसे अपने साथ उड़ने के लिए ललकारने लगा ।

बढ़-चढ़कर बोलनेवाले और कांव-कांव करनेवाले कौवे की चुनौती जब हंसों ने सुनी, तो वे हंस पड़े ।

एक ने कहा, "हम मानसरोवर में निवास करनेवाले राजहंस हैं, और हमेशा इस पृथ्वी के एक छोर से दूसरे छोर तक उड़ते हैं । हम दूर-दूर जाते हैं । इसलिए सब पक्षियों में हमारा सम्मान होता आया है । क्या तेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गयी है, जो हमारे जैसे हंसों को अपने साथ उड़ने के लिए ललकार रहा है ? जा-जा, तू क्या खाकर हमारी बराबरी करेगा !"

कहां तो कौवा बढ़-चढ़कर बातें बना रहा था और कहां हंसों ने उसे कोई महत्त्व ही नहीं दिया ।

कौवा बोला, "मैं एक सौ एक तरह की उड़ानें भर सकता हूं । तुम लोगों के सामने जब मैं इतने प्रकार की उड़ानें भरूंगा, तब तुम हक्के-बक्के देखते रह जाओगे । मेरे साथ तुम भी अपना पक्का इरादा बनाओ, और आकाश में तरह-तरह की उड़ानों का कौशल दिखाने मेरे साथ चलो ।"

कौवे की बात सुनकर हंस ने कहा, "काग, तू अवश्य एक सौ एक तरह की उड़ानें भर सकता होगा । लेकिन मैं तो उसी एक उड़ान को जानता हूं जिसे सारे पक्षी जानते हैं । दूसरी किसी उड़ान का मुझे पता नहीं है । तू जिस उड़ान को ठीक समझे, उसी से उड़कर मेरा मुकाबला कर ।"

हंस की बात सुनकर आस-पास बैठे कौवे जोर-जोर से हंसने लगे । आपस में बोले, "भला सोचो, यह हंस एक ही उड़ान से किस तरह एक सौ एक उड़ानों की बराबरी कर सकता है ? यह कौवा बलवान और तेज उड़नेवाला है । एक ही उड़ान में यह हंस को हरा देगा ।"

दोनों पक्ष के कौवों और हंसों ने पंख फड़फड़ाकर तालियां बजायीं । दोनों उड़नेवाले पंख फैलाकर तैयार हो गये ।

एक कौवे ने कांव की आवाज की और दोनों होड़ लगाकर उड़े । हंस को एक ही उड़ान भरनी थी, जब कि कौवा सौ तरह उड़ानें भरनेवाला था ।

कौवे ने तरह-तरह से, विचित्र उड़ानें भरनी शुरू कीं। दूसरे कौवे यह देखकर बड़े खुश हुए और जोर-जोर से कांव-कांव करने लगे। हंसों का उपहास करते हुए वे बोले, "देखो, कौवे की यह उड़ान देखो; देखो, कौवे की वह उड़ान देखो!"

हंस ने तो बस एक-सी सुन्दर, शांत गति से उड़ना शुरू किया।

कौवे की नाटकीय उड़ानों को देखकर कुछ देर ऐसा लगा कि हंस कौवे से हार जायेगा। कौवा कभी सीधा, कभी उल्टा, कभी तिरछा उड़ रहा था।

कौवों ने हंसों का अपमान करते हुए कहा, "देखो, तुम्हारा उड़नेवाला हंस कौवे से पिछड़ता जा रहा है।"

उड़नेवाले हंस ने कौवों की बात सुन ली। उसने अचानक अपनी गति तेज कर दी और मकरालय समुद्र के ऊपर, पश्चिम दिशा की तरफ, तीर की तरह उड़ने लगा।

इधर कौवा कलाबाजी दिखाकर उड़ते-उड़ते थकने लगा। रुकने के लिए न तो कहीं कोई द्वीप था, और न कोई पेड़ कहीं दिखाई दे रहा था। वह मन-ही-मन डर गया, और घबराकर बेहोश-सा होने लगा। समुद्र का उसे कहीं अंत ही नहीं दीखता था। उसने सोचा कि मैं इस अथाह महासागर में कहां उतरूंगा? यह तो आकाश से भी बड़ा है। क्या इसी समुद्र में मेरी समाधि बनेगी?

उधर जब हंस ने उड़ते हुए इधर-उधर देखा तो उसे कौवा कहीं नजर नहीं आया। वह बहुत आगे बढ़ गया था। हंस ने उड़ना रोक दिया और उसका इन्तजार करने लगा। थोड़ी देर बाद थका-मांदा कौवा, किसी तरह पंख चलाता उसके पास पहुंचा।

हंस ने देखा कि कौवे की हालत बहुत बुरी हो गयी है। थोड़ी ही देर में वह पानी में डूबनेवाला है।

हंस को घमंडी कौवे पर दया आ गयी। वह बोला, "तू तो अपनी बहुत-सी उड़ानों का बयान करते थकता नहीं था, लेकिन उस समय तूने इस साधारण उड़ान की बात नहीं सोची? देख, अब किस हालत में तू है। तेरे दोनों पंख और चोंच बार-बार समुद्र के पानी को छूने लगे हैं।



"तेरे दोनों पंख और चोंच बार-बार समुद्र के पानी को छूने लगे हैं।"

अब थोड़ी देर बाद तू समुद्र के अंदर समा जायेगा ।"

कौवे ने बड़ी करुण आंखों से हंस की तरफ देखा ।

हंस बोला, "जल्दी आ, मैं अभी तुझे बचाता हूं ।"

कौवा थकी आवाज में हंस से बोला, "भाई हंस, हम तो कौवे हैं और बिना बात कांव-कांव करते हैं । हम भला उड़ान की क्या जानें! मैं अपने प्राणों की रक्षा के लिए तुम्हारी शरण में हूं । तुम मुझे पानी के किनारे तक पहुंचा दो," इतना कहते-कहते कौवे की शक्ति जवाब दे गयी और वह महासागर में गिर पड़ा ।

हंस बोला, "तू तो अपनी बड़ाई में कोई कसर नहीं रखता था । अपनी एक सौ एक उड़ानों को याद कर । तू तो मुझसे बहुत बढ़ा-चढ़ा था। फिर इस तरह थककर महासागर में कैसे गिर पड़ा ?"

कौवा हंस को खुश करने के लिए बोला, "मैं जूठन खा-खाकर घमंड से फूल उठा था । सबका अपमान कर अपने को गरूड़ के समान बलवान मानने लगा था । शक्तिशाली हंस, अब तुम्हीं मेरे प्राणों की रक्षा कर सकते हो । तुम मुझे इस बार बचा लो । फिर मैं कभी किसी का अपमान नहीं करूंगा ।"

कौवे की हालत अब अंतिम स्थिति की तरफ थी ।

दयालु हंस ने उसे पंजे से उठाकर बड़ी तेजी से ऊपर उछाला और धीरे से अपनी पीठ पर चढ़ा लिया ।

इसके बाद उसने अपनी उड़ान उस दिशा की तरफ शुरू की जहां से होड़ लगाकर दोनों उड़े थे ।

हंस ने कौवे को उसकी पुरानी जगह पर छोड़ दिया और तेजी से उड़ान भरता हुआ अपने देश को चला गया ।

कौवा पराजित और अपमानित उस द्वीप पर बैठा रहा । उसके साथी कौवे अब भाग चले थे । जो हार जाता है, उसका कोई साथ नहीं देता है।

कौवे ने सोचा कि अब जूठन का बढ़िया माल खाकर मैं अपनी जिंदगी नहीं बिताऊंगा । मुझे भी अपना पेट भरने के लिए परिश्रम करना चाहिए ।

कौवा भी वैश्य का घर छोड़कर जंगल की तरफ उड़ गया ।

●

हमारे आगामी प्रकाशन

- कृतज्ञ और कृतघ्न
- भगीरथ
- युधिष्ठिर का स्वर्गारोहण
- ब्रह्मा का गर्वहरण
- शरणागत वत्सलता
- कहानी एक तूफान की
- हजरत निजामुद्दीन औलिया
- अंगुलिमाल
- प्रभु का प्रकाश
- तीन साधु

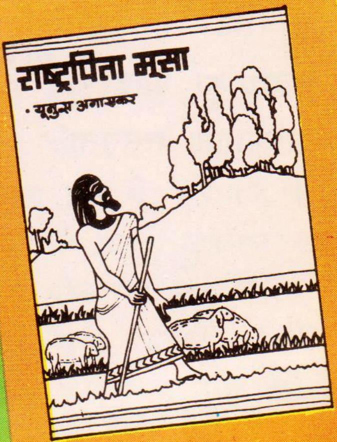
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा की स्थापना 1938में महात्मा गांधी की प्रेरणा तथा पेरीन बहन केप्टन के सद्प्रयत्नों से हुई थी। इस संस्था की कोशिश ऐसी राष्ट्रभाषा विकसित करने की रही है, जिसे आम जनता आसानी से समझ सके और जो नागरी व उर्दू दोनों लिपियों में लिखी जा सके। वह भाषा है हिन्दुस्तानी।

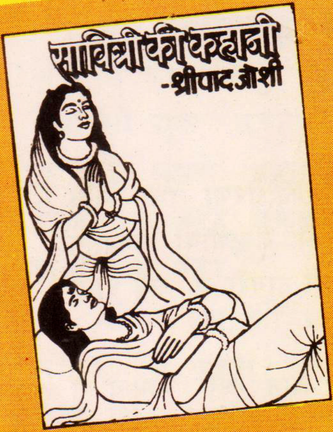
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा दुनिया के सभी धर्मों से चुनी हुई, ज्ञान और आनन्द से भरी हुई कहानियों की एक सौ किताबों का जो सेट बच्चों के लिए तैयार कर रही है, यह उसकी पहली किस्त है। हर किताब की क़ीमत दो रुपये होगी।

बच्चों की कहानियां











एकमात्र विक्रेता
एस. चांद एंड कंपनी लि.
पो. बॉ. नं. ५७३३
रामनगर
नयी दिल्ली - ११० ०५५